नागार्जुन की यथार्थवादी दृष्टि एवं लोक-चेतना।

स्नातक भाग-3
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पंचम पत्र

हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में 'नागार्जुन' का विशिष्ट स्थान है। इनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। मैथिली में यात्री के नाम से रचना करते थे। बौद्ध धर्म अंगीकार कर लेने के उपरांत इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रख लिया। नागार्जुन के व्यक्तित्व पर सर्वाधिक प्रभाव राहुल सांकृत्यायन एवं निराला जी का पड़ा। चूंकि राजनीतिक स्तर पर नागार्जुन साम्यवादी विचारधारा के पोषक रहे, इसीलिए इनकी कविताओं में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। इनकी कविताओं में निराला जैसी सजगता, आक्रोश, व्यंग्य, अक्खड़ता, हुंकार एवं ललकार है। शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर शोषितों के प्रति सहानुभूति

दिखाकर तथा अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करने वाली कविताओं की रचना करके इन्होंने प्रगतिवादी विचारधारा का पोषण किया है।

नागार्जुन सत्ता, व्यवस्था एवं पूँजीवाद के प्रति आक्रोश व्यक्त करने में निरंतर अग्रणी रहे। इनकी कविता में राष्ट्र प्रेम है तथा आजादी के बाद के भारत की यथार्थ तस्वीर है:

"देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से।
मिले न रोजी रोटी भटके दरदर बने भिखारी से।"

कवि नागार्जुन ने अपने युगीन यथार्थ एवं समसामयिक चेतना को काव्य का विषय बनाया है। वे यह देख रहे थे कि शोषित वर्ग अभावों की चक्की में पिस रहा है, कृषक अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं, श्रमिक को भरपेट भोजन भी मयस्सर नहीं होता। दूसरी ओर उच्च वर्ग भोग विलास में पानी की तरह धन बहा रहा है। बाह

से खद्दरधारी हैं पर भीतर से कसाई है:-

"जमींदार है, साहूकार हैं बनिया हैं, व्यापारी हैं,
अन्दर-अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी हैं।।"

सामाजिक विषमता की बढ़ती हुई खाई उसे दुखी करती है :-

"खादी ने मलमल से अपनी साठ-गाँठ कर डाली है।
बिड़ला टाटा डालमिया की तीसों दिन दीवाली है।।"

कवि को अपने देश के खेत-खलिहानों से प्रेम है। इसीलिए वह कहता है :-

"खेत हमारे भूमि हमारी सारा देश हमारा है।
इसीलिए तो हमको इसका चप्पा-चप्पा प्यारा है।।"

नागार्जुन की कविताओं में जनजीवन की आशा-आकांक्षा व्यक्त है। उन्होंने अभावों से ग्रस्त पीड़ित एवं शोषित सर्वहारा वर्ग की वेदना का अनुभव किया और उसे कविता में वाणी प्रदान की। डॉ० प्रकाश चंद्र गुप्त ने कहा है कि, " नागार्जुन ऐसे साहित्यकार हैं जो अभावों में ही जनमें हैं, पीड़ित वर्ग के कष्टों को उन्होंने स्वयं

सेला है। निसंदेह ऐसे ही व्यक्ति भारत की निम्नवर्गीय जनता का सच्चा सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर सकता है

नागार्जुन की कविताओं में यथार्थ पूरी नग्नता के साथ उपस्थित है वर्तमान समय में सत्य बोलना पाप है और चापलूसी करना, झूठ बोलना युग धर्म बन गया है कवि ने अपनी व्यंग्य रचना 'चना ओर गरम' में भ्रष्टाचारी, ~~स्वार्थी~~ स्वार्थी अवसरवादी लोगों की पोल ~~खोलते~~ खोलते हुए तीखा व्यंग्य किया है।

"चना है बना मसालेदार
खाइए भी तो यह सरकार
मिलेगा परमिट बारम्बार
मिलेंगे सौदे सभी उधार।"

नेता लोग किस प्रकार गाँधी के नाम पर वोट बटोरकर गाँधी जी के सिद्धांतों को तिलांजलि दे रहे हैं।

" बेंच बेचकर गाँधी जी का नाम

बटोरे वोट
बैंक बैलेन्स बढ़ाओ
राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहाओ।"

नागार्जुन सच्चे जनकवि थे उनकी लोक-दृष्टि अत्यंत व्यापक है। वे गाँव गली की बात करते हैं और उस भाषा में करते हैं जिससे सभी परिचित हैं। बिना लाग-लपेट के कबीर की भाँति अपनी बात कहने वाले कवि के रूप में नागार्जुन सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता में वे 'भूख' का चित्रण इन शब्दों में किया है:

"बहुत दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास।
बहुत दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।।"

नागार्जुन कहीं राजनीति एवं राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य करते हैं तो कहीं पूंजीपतियों की लोलुपता एवं स्वार्थपरता को कविता का विषय बनाते हैं। निश्चय ही नागार्जुन की लोकदृष्टि यथार्थपरक, व्यापक एवं अति संवेदनशील है।